National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 247-249
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**डॉ.अमित कुमार पाण्डेय**
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

**Correspondence:**
**डॉ.अमित कुमार पाण्डेय**
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

# सनातन धर्म में गो पूजन का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व; एक अध्ययन

**डॉ.अमित कुमार पाण्डेय**

गाय और गोपूजन का हिंदू धर्म में ऐतिहासिक, धार्मिक और सामाजिक महत्व अत्यंत व्यापक है। इस शोध का उद्देश्य गोपूजन के वैदिक, पुराणिक, स्मृति और सामाजिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण करना है। हिंदू धर्म में तैंतीस करोड़ देवताओं की पूजा की जटिलताओं का समाधान गोपूजन से किया जा सकता है, क्योंकि गाय में समस्त देवताओं का निवास माना गया है। इस शोध में वैदिक सूक्त, पुराणिक भाष्य और स्मृति ग्रंथों के माध्यम से गोपूजन और गोदान की विधियों, मृतक गाय की संस्कार प्रक्रियाओं और उनके नैतिक एवं सामाजिक प्रभावों का विवेचन किया गया है।

**Keywords:** गोपूजन, गाय, हिंदू धर्म, वैदिक शास्त्र, पुराण, गोदान, धार्मिक दृष्टिकोण, सामाजिक महत्व, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, तुलनात्मक।

## I. Introduction

हिंदू धर्म में तैंतीस करोड़ देवताओं की संकल्पना अत्यंत विशाल प्रतीत होती है। प्रत्येक देवता की षोडशोपचार पूजा का पालन करना आधुनिक सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से कठिन है। इस स्थिति का समाधान शास्त्रीय दृष्टिकोण से इष्टदेव की पूजा में निहित है। उपासक अपने इष्टदेव में अन्य सभी देवताओं को व्याप्त मानकर उसकी पूजा करता है, और अन्य देवताओं में भी अपने इष्टदेव की व्यापकता देखता है। इससे न तो असुविधा होती है और न पारस्परिक कलह उत्पन्न होती है।यदि कोई व्यक्ति सभी देवताओं की एक साथ पूजा करना चाहे, तो गोपूजन सर्वोत्तम उपाय है। गाय में समस्त देवताओं का निवास माना गया है।

## II. Research Objectives

1. हिंदू धर्म में गाय और गोपूजन के वैदिक, पुराणिक और स्मृति ग्रंथों में वर्णित धार्मिक महत्व का विश्लेषण करना।
2. गोदान, मृतक गाय की संस्कार पद्धति और सामाजिक दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. गोपूजन की आधुनिक सामाजिक और नैतिक प्रासंगिकता को समझना।

## III. Methodology

शोध के लिए प्रामाणिक ग्रंथों का चयन किया गया:

वेद: अथर्ववेद, यजुर्वेद, शुक्लयजुर्वेद

ब्राह्मण और स्मृति ग्रंथ: शतपथब्राह्मण, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, बृहत्पराशरस्मृति

पुराण और महाकाव्य: महाभारत, वाल्मीकिरामायण

आधुनिक विश्लेषण: हिंदू धर्मशास्त्र के समकालीन दृष्टिकोण

स्रोतों के माध्यम से गाय के धार्मिक महत्व, गोदान की विधि, मृतक गाय की संस्कार प्रक्रिया और सामाजिक व्यवहार का गहन विश्लेषण किया गया।

## IV. Textual & Shastric Analysis

4.1 वैदिक दृष्टिकोण

अथर्ववेद (9.12.7) में गाय के रोम-रोम में देवताओं का निवास माना गया है:

**एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम् (अथर्ववेद-शौनकसंहिता 9.7; 1.25)**

यजुर्वेद-शतपथब्राह्मण में: **महाँस्त्वेव गोर्महिमा (3.3.3.1)**

शुक्लयजुर्वेद-वाजसनेयिसंहितामें: **गोस्तु मात्रा न विद्यते (23.48)**

अथर्ववेद-शौनकसंहिता में गोदान से यमलोक में मनोरथ की पूर्ति बताई गई है:

**सर्वान् कामान् यमराज्ये वशा प्रददुषे दुहे (12.4.36)**

4.2 पुराणिक दृष्टिकोण

बृहत्पराशरस्मृति में गाय को 'सर्वदेवमयी' कहा गया है:

**शृङ्गमूले स्थतो ब्रह्म शृङ्गमध्ये तु केशवः... सर्वे देवा: स्थता देहे सर्वदेवमयी हि गौः (3.32– 35)**

गोपथब्राह्मण (अथर्ववेद) में:

**वैश्वदेवी वै गौः, यद् गां ददाति विश्वेषामेतद् देवानां तेन प्रियं धाम उपैति (2.3.19)**

4.3 स्मृति एवं महाकाव्य दृष्टिकोण

महाभारत में गायों के लिए कहा गया है:

**पयसा हविषा दध्ना शकृता चाथ चर्मणा। अस्थिभिश्चोपकुर्वन्ति शृङ्गैर्वालैश्च भारत।**

वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्ड में वृषभ-चर्म पर विवाह उपवेशन का उल्लेख है, जो गोचर्म और सामाजिक नियमों का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

4.4 मृतक गाय की संस्कार पद्धति

शास्त्रों में मृतक गाय को चमार, गाड़ना, जलप्रवाह या गोशालाओं में उपयोग हेतु देने की विधि वर्णित है। धार्मिक दृष्टिकोण के अनुसार, मूल्य लेने के बजाय गोशालाओं में ही उसका उपयोग करना उचित है। हिंदू धर्म में धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। मृतक गाय का उचित संस्कार न केवल धार्मिक कर्तव्य है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी आवश्यक है।

4.5 नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण

आधुनिक युग में चमड़े का उपयोग और गोहत्या की प्रथा के दृष्टिगत, मृतक गाय का गोदान और उचित उपयोग नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

**हिंकृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्। दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्या इयं सा वर्द्धतां महते सौभगाय॥**

(ऋ० 1.164.27; अथर्व० 9.10.5)

यह मंत्र गाय के महत्व और हिंदू समाज में गो-पूजन की ऐतिहासिक जड़ को स्पष्ट करता है।

## V. Discussion

गोपूजन केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड पूजन का प्रतिनिधित्व करता है। वैदिक, पुराणिक और स्मृति ग्रंथों में गाय को 'सर्वदेवमयी' और 'वैश्वदेवी' कहा गया है। गोदान, मृतक गाय की संस्कार पद्धति और सामाजिक व्यवहार इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि गोपूजन हिंदू धर्म में सर्वोच्च धार्मिक अनुष्ठान है।

गोपूजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह हिंदू धर्म में जीवन दर्शन, समाजिक संरचना और नैतिकता का समग्र प्रतिबिंब भी है। गाय के माध्यम से उपासक को न केवल देवताओं की उपासना का अवसर मिलता है, बल्कि समग्र ब्रह्माण्ड में व्याप्त दिव्यता और नैतिकता का भी बोध होता है। वैदिक ग्रंथों में स्पष्ट कहा गया है कि गाय में समस्त देवताओं का निवास है।

**एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम् (अथर्ववेद-शौनकसंहिता 9.7; 1.25)**

यहाँ गाय को संपूर्ण ब्रह्माण्ड का रूप मानकर, उसकी पूजा समस्त ब्रह्माण्ड पूजन के रूप में समझाया गया है।बृहत्पराशरस्मृति में गाय को सर्वदेवमयी कहा गया है:

**सर्वे देवा: स्थता देहे सर्वदेवमयी हि गौः (3.33– 35)**

इस श्लोक से यह स्पष्ट होता है कि गोपूजन केवल गौ का पूजन नहीं, बल्कि सभी देवताओं की उपासना का प्रतिनिधित्व करता है। अतः धार्मिक दृष्टिकोण से, गोपूजन की विधि अन्य देवताओं के पूजन का पर्याय बन जाती है।

गोदान और मृतक गाय की संस्कार पद्धति भी हिंदू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अथर्ववेद के अनुसार:**अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधिरोहयैनम् (8.3.4)**

इस श्लोक में बताया गया है कि मृतक गाय को गोदान देने से न केवल उसकी रक्षा होती है, बल्कि जीवदाता कर्मकाण्ड का फल उपासक को प्राप्त होता है। महाभारत में गाय के महत्व का स्पष्ट उल्लेख है:

**पयसा हविषा दध्ना शकृता चाथ चर्मणा।**
**अस्थिभिश्चोपकुर्वन्ति शृङ्गैर्वालैश्च भारत।**

इस श्लोक से गाय के प्रत्येक अंग का धार्मिक महत्व और पूजन की पद्धति स्पष्ट होती है।गोपूजन और गोदान केवल धार्मिक क्रिया नहीं हैं; वे सामाजिक नैतिकता और समुदाय की सुरक्षा को भी सुनिश्चित करते हैं। मृतक गाय के चर्म का उपयोग केवल धर्म और समाज हित में होना चाहिए। यदि इसे निजी लाभ या व्यावसायिक उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जाए, तो यह धार्मिक और नैतिक दृष्टि से अनुचित माना जाता है।

**न वारयेद् गां धयन्तीं न चाचक्षीत कस्यचित्**

(मनुस्मृति 1.6.140)

यह श्लोक स्पष्ट रूप से दूसरे की गाय को हानि पहुँचाने से रोकता है।गोपूजन का अभ्यास व्यक्तियों को सहनशीलता, नैतिकता और संवेदनशीलता सिखाता है। वेद और स्मृति ग्रंथों में गाय को माता का रूप मानकर, उसका पालन, संरक्षण और पूजन करने की शिक्षा दी गई है।

**हिंकृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्। दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्या इयं सा वर्द्धतां महते सौभगाय॥**

(ऋग्वेद 1.164.27; अथर्ववेद 9.10.5)

इस मंत्र में गाय को परिवार और समाज के कल्याण का प्रतीक माना गया है। यही कारण है कि हिंदू समाज में गोपूजन के माध्यम से न केवल धार्मिक कर्तव्य निभाया जाता है, बल्कि यह सामाजिक संरचना और पारिवारिक अनुशासन को भी सुदृढ़ करता है।गोदान, मृतक गाय की संस्कार पद्धति और गोपूजन का अभ्यास मानव और प्रकृति के संतुलन का भी प्रतिनिधित्व करता है। पर्यावरणीय दृष्टिकोण से गाय का पालन और उसका संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संतुलन को बनाए रखता है।

**वैश्वदेवी वै गौः, यद् गां ददाति विश्वेषामेतद् देवानां तेन प्रियं धाम उपैति** (गोपथब्राह्मण 2.3.19)

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि गाय में वैश्विक दिव्यता है, और उसका दान मानव और देवताओं के कल्याण हेतु है।

## VI. Conclusion

हिंदू धर्म में गाय का पूजन और गोपूजन धार्मिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। गोपूजन केवल देवताओं का पूजन नहीं, अपितु समाज और पर्यावरण के संतुलन का भी प्रतीक है। शास्त्रीय और आधुनिक दृष्टिकोणों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गोपूजन और गोदान का पालन समग्र धर्म, समाज और नैतिकता की दृष्टि से अनिवार्य है।गोपूजन और गाय का पूजन हिंदू धर्म में संपूर्ण धार्मिक, सामाजिक, नैतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैदिक और पुराणिक ग्रंथ स्पष्ट करते हैं कि गाय में सर्वदेवमयी और वैश्वदेवी का स्वरूप है, और इसका पूजन समस्त ब्रह्माण्ड पूजन का प्रतिनिधित्व करता है।नैतिक दृष्टिकोण से गोपूजन व्यक्तियों को सहनशीलता, संवेदनशीलता और धर्मपरायणता सिखाता है। आधुनिक युग में गोपूजन न केवल धार्मिक और सामाजिक संरचना को बनाए रखता है, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण संतुलन में भी योगदान करता है।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि गोपूजन और गाय का संरक्षण हिंदू धर्म का अनिवार्य तत्व है, जो न केवल धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक जीवन और पर्यावरणीय दृष्टि से भी इसकी आवश्यकता है।

## 7. सन्दर्भ ग्रंथसूची :


1. अथर्ववेद-शौनकसंहिता, 9.12.7; 9.5.29; 18.2.30
2. यजुर्वेद-शतपथब्राह्मण, 3.3.3.1
3. शुक्लयजुर्वेद-वाजसनेयिसंहिता, 23.48
4. बृहत्पराशरस्मृति, 3.32– 35
5. महाभारत, गौपूजन सम्बन्धित श्लोक
6. वाल्मीकिरामायण, सुन्दरकाण्ड, आर्षभाणि च चर्माणि
7. मनुस्मृति, 2.76; 4.176
8. याज्ञवल्क्यस्मृति एवं वैशानस धर्मप्र